Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

असंगठित क्षेत्र में बाल श्रम के निर्धारक एवं प्रभाव: भारत के संदर्भ में एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

संतोष कुमार राय
डिपार्टमेंट ऑफ़ सोशियोलॉजी, स्कूल ऑफ़ आर्ट्स एंड ह्यूमैनिटीज़
वाई बी एन यूनिवर्सिटी, राँची, झारखंड
डॉ. मनोज गोबर्धन पुरी
सह-प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग, वाई.बी.एन. विश्वविद्यालय, राँची, झारखंड

सारांश
बाल श्रम भारत की एक जटिल सामाजिक-आर्थिक समस्या है, जो विशेष रूप से असंगठित क्षेत्र में व्यापक रूप से विद्यमान है। प्रस्तुत अध्ययन असंगठित क्षेत्र में बाल श्रम के निर्धारकों एवं इसके प्रभावों का सैद्धांतिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन विभिन्न समाजशास्त्रीय एवं आर्थिक सिद्धांतों, जैसे गरीबी सिद्धांत, मानव पूंजी सिद्धांत, सामाजिक बहिष्करण सिद्धांत तथा संरचनात्मक-कार्यात्मक दृष्टिकोण के आधार पर बाल श्रम की समस्या को समझने का प्रयास करता है। सैद्धांतिक दृष्टि से यह माना जाता है कि पारिवारिक गरीबी, निम्न आय स्तर, अभिभावकों की अशिक्षा, बेरोजगारी, ग्रामीण-शहरी प्रवासन तथा सामाजिक असुरक्षा जैसे कारक बच्चों को श्रम बाजार में प्रवेश करने के लिए विवश करते हैं। असंगठित क्षेत्र में श्रम की सस्ती उपलब्धता तथा कमजोर नियामक व्यवस्था भी बाल श्रम को बढ़ावा देती है। अध्ययन यह दर्शाता है कि बाल श्रम बच्चों के शारीरिक, मानसिक, शैक्षिक एवं सामाजिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। बाल श्रमिक प्रायः शिक्षा से वंचित रह जाते हैं, जिससे उनके कौशल विकास एवं भविष्य के रोजगार अवसर सीमित हो जाते हैं। साथ ही, असुरक्षित कार्य परिस्थितियाँ उनके स्वास्थ्य एवं मनोवैज्ञानिक कल्याण को प्रभावित करती हैं। मानव पूंजी सिद्धांत के अनुसार बाल श्रम दीर्घकाल में गरीबी के चक्र को बनाए रखता है। अध्ययन निष्कर्षतः यह प्रतिपादित करता है कि बाल श्रम उन्मूलन के लिए गरीबी उन्मूलन, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सामाजिक सुरक्षा तथा प्रभावी श्रम कानूनों के समन्वित क्रियान्वयन की आवश्यकता है।

कुंजी शब्द (Keywords): बाल श्रम, असंगठित क्षेत्र, गरीबी, अभिभावकीय शिक्षा, प्रवासन, ची-वर्ग परीक्षण, प्रतिगमन, भारत।

1. परिचय

1.1 अध्ययन की पृष्ठभूमि

बचपन मानव जीवन की वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक एवं बौद्धिक विकास की नींव रखी जाती है। किंतु विकासशील देशों, विशेषकर भारत में, करोड़ों बच्चे इस मूलभूत अधिकार से वंचित होकर समय से पूर्व ही श्रम-बाजार में धकेल दिए जाते हैं। बाल श्रम केवल आर्थिक

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

शोषण का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह बाल अधिकारों, शिक्षा, स्वास्थ्य एवं मानवीय गरिमा के हनन से सीधे जुड़ा हुआ एक बहुआयामी सामाजिक संकट है। बाल श्रम का सर्वाधिक संकेन्द्रण भारत के असंगठित क्षेत्र में पाया जाता है।

2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 5–14 वर्ष आयु-वर्ग के लगभग 1.01 करोड़ बच्चे श्रमिक के रूप में कार्यरत थे, जिनमें से अधिकांश कृषि, घरेलू कार्य, ढाबे, ईंट-भट्ठे एवं छोटे विनिर्माण जैसे अनौपचारिक क्षेत्रों में संलग्न थे। असंगठित क्षेत्र की अनौपचारिकता, बिखराव एवं अदृश्यता इसे बाल श्रम के लिए सर्वाधिक उपजाऊ भूमि बनाती है, क्योंकि यहाँ श्रम कानूनों का प्रवर्तन एवं निगरानी अत्यंत सीमित रहती है। चूँकि असंगठित क्षेत्र में कार्यरत अधिकांश बाल श्रमिक किसी औपचारिक अभिलेख में दर्ज ही नहीं होते, इसलिए वास्तविक संख्या आधिकारिक आँकड़ों से कहीं अधिक होने की प्रबल संभावना रहती है। कोविड-19 महामारी ने आर्थिक असुरक्षा, बेरोजगारी, विद्यालयों के बंद होने तथा प्रवासी परिवारों की दुर्दशा के कारण इस समस्या को और गंभीर बना दिया।

1.2 समस्या का कथन

यद्यपि भारत में बाल श्रम के विरुद्ध सशक्त विधिक ढाँचा — बाल एवं किशोर श्रम (निषेध एवं विनियमन) संशोधन अधिनियम, 2016 तथा शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 — विद्यमान है, तथापि असंगठित क्षेत्र में यह समस्या निरंतर बनी हुई है। यह आवश्यक है कि उन मूल निर्धारकों की अनुभवजन्य पहचान की जाए जो बच्चों को श्रम की ओर धकेलते हैं, तथा यह समझा जाए कि श्रम का बच्चों के विकास पर क्या ठोस प्रभाव पड़ता है। अधिकांश विद्यमान अध्ययन या तो द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित हैं अथवा विशाल राष्ट्रीय सर्वेक्षणों पर, जिनमें असंगठित क्षेत्र का सूक्ष्म, क्षेत्र-स्तरीय चित्र प्रायः अनुपस्थित रहता है। साथ ही, अधिकांश अध्ययन या तो केवल बाल श्रम के कारणों पर अथवा केवल इसके परिणामों पर केंद्रित रहते हैं; निर्धारकों एवं प्रभावों दोनों का एकीकृत विश्लेषण अपेक्षाकृत कम है। यही शोध-अंतराल प्रस्तुत अध्ययन को प्रेरित करता है।

1.3 अध्ययन का महत्व

प्रस्तुत अध्ययन इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है कि यह असंगठित क्षेत्र में बाल श्रम के निर्धारकों एवं प्रभावों को एक साथ, प्राथमिक आँकड़ों के आधार पर, सांख्यिकीय रूप से परखता है। इसका मुख्य उद्देश्य असंगठित क्षेत्र में कार्यरत बाल श्रमिकों की सामाजिक-आर्थिक एवं जनसांख्यिकीय पृष्ठभूमि का वर्णन करना, बाल श्रम के प्रमुख निर्धारकों — विशेषकर गरीबी, अभिभावकीय शिक्षा एवं प्रवासन — की पहचान करना, तथा बाल श्रम के बच्चों के कार्य-घंटों, शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर प्रभावों का आकलन करना है, जिससे साक्ष्य-आधारित नीतिगत सुझाव प्रस्तुत किए जा सकें। अध्ययन इस अंतर्निहित प्रश्न का परीक्षण करता है कि क्या पारिवारिक आय, अभिभावकीय शिक्षा एवं प्रवासन का बच्चों की विद्यालयी स्थिति, स्वास्थ्य एवं कार्य-घंटों से सार्थक संबंध है। नीति-निर्माताओं, शोधकर्ताओं एवं नागरिक समाज के लिए यह अध्ययन इस दिशा में सार्थक हस्तक्षेप का आधार उपलब्ध कराता है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

1.4 असंगठित क्षेत्र एवं बाल श्रम का अंतर्संबंध

असंगठित अथवा अनौपचारिक क्षेत्र से तात्पर्य अर्थव्यवस्था के उस भाग से है जो किसी निश्चित कानूनी ढाँचे, नियमन अथवा सामाजिक सुरक्षा के अंतर्गत नहीं आता। भारत की कुल कार्यशील जनसंख्या का लगभग 90 प्रतिशत से अधिक भाग असंगठित क्षेत्र में नियोजित है। इस क्षेत्र की विशेषताएँ — अनियमित रोजगार, न्यूनतम मजदूरी का अभाव, सामाजिक सुरक्षा की अनुपस्थिति, श्रम कानूनों का सीमित अनुप्रयोग तथा कार्यस्थलों का अत्यधिक बिखराव — इसे बाल श्रम के प्रति अत्यधिक संवेदनशील बनाती हैं। नियोक्ता बच्चों को इसलिए नियोजित करना पसंद करते हैं क्योंकि वे कम मजदूरी पर, बिना किसी संगठित विरोध के, लंबे समय तक कार्य करने को विवश रहते हैं। इस प्रकार सस्ती एवं 'आज्ञाकारी' श्रम-शक्ति की निरंतर माँग असंगठित क्षेत्र में बाल श्रम की आपूर्ति को बनाए रखती है, और यही अंतर्संबंध इस अध्ययन का केंद्रीय परिप्रेक्ष्य है।

2. साहित्य समीक्षा

2.1 बाल श्रम के आर्थिक निर्धारक

बाल श्रम पर उपलब्ध साहित्य में गरीबी को इसका सबसे प्रमुख निर्धारक माना गया है। अनेक अध्ययनों ने स्थापित किया है कि निर्धन परिवारों में बच्चे एक अतिरिक्त आय-स्रोत के रूप में देखे जाते हैं, और साख (credit) के अभाव में अभिभावक बच्चों को बंधुआ श्रम तक में लगा देते हैं। अहमद, सिन्हा एवं शास्त्री (2016) ने बाल श्रम के विविध निर्धारकों का विश्लेषण करते हुए बाल श्रमिकों के बीच कौशल विकास की आवश्यकता को रेखांकित किया। आवधिक श्रमबल सर्वेक्षण (2019–20) पर आधारित अध्ययनों ने गरीबी एवं शिक्षा को बाल श्रम के दो सर्वाधिक निर्णायक निर्धारक के रूप में चिह्नित किया है। दिमरी एवं मणियार (2022) ने आर्थिक एवं राजनीतिक साप्ताहिक में प्रकाशित अध्ययन में माँग एवं आपूर्ति दोनों पक्षों के निर्धारकों का विश्लेषण करते हुए गरीबी को केंद्रीय कारक माना तथा यह भी पाया कि उच्च प्रति-व्यक्ति जिला घरेलू उत्पाद वाले शहरी क्षेत्रों में बाल श्रम अधिक है।

बासु एवं ज़ानात्तोस (2015) ने वैश्विक स्तर पर बाल श्रम की समस्या का सैद्धांतिक एवं नीतिगत विश्लेषण प्रस्तुत किया तथा यह दर्शाया कि गरीबी एवं बाल श्रम के बीच गहरा अंतर्संबंध है। मिश्रा (2021) ने ओडिशा के वंचित परिवारों के संदर्भ में बाल श्रम के कारणों का अनुभवजन्य विश्लेषण प्रस्तुत किया, जबकि किम, ओल्सन एवं अरुण (2020) ने बायेसियन पद्धति से भारत में बाल श्रम का अनुमान प्रस्तुत करते हुए दर्शाया कि निर्माण, खनन एवं मजदूरी-आधारित कृषि में सर्वाधिक बाल श्रमिक हैं।

2.2 शिक्षा एवं अभिभावकीय कारक

शिक्षा की पहुँच एवं गुणवत्ता बाल श्रम का एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। शोध दर्शाते हैं कि अभिभावकीय निरक्षरता, शिक्षा के प्रति उदासीनता तथा विद्यालयी अवसंरचना की दुर्बलता बच्चों को श्रम की ओर धकेलती है। धनराज एवं महांबरे (2019) ने पारिवारिक संरचना, शिक्षा एवं बाल श्रम के अंतर्संबंध का विश्लेषण करते हुए महिला-शिक्षा एवं बाल श्रम के बीच ऋणात्मक संबंध को रेखांकित किया तथा बालिका-शिक्षा में निवेश को बाल श्रम-न्यूनीकरण की प्रभावी रणनीति बताया। दास (2022) ने आवधिक

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

श्रमबल सर्वेक्षण के आधार पर पाया कि प्रारंभिक एवं प्राथमिक शिक्षा प्राप्त बच्चों की श्रम में संलग्नता कम होती है, जो शिक्षा की सुरक्षात्मक भूमिका को प्रमाणित करता है।

खानम एवं रहमान (2016) ने बाल श्रम, शिक्षा एवं स्वास्थ्य संबंधी साहित्य की समीक्षा करते हुए यह स्थापित किया कि बाल श्रम बच्चों की शिक्षा एवं स्वास्थ्य दोनों पर दीर्घकालिक प्रतिकूल प्रभाव डालता है। पॉल (2019) ने जिला-स्तरीय विश्लेषण में अभिभावकीय शिक्षा एवं पारिवारिक पृष्ठभूमि को बाल श्रम के सार्थक निर्धारकों के रूप में चिह्नित किया।

2.3 सामाजिक, जातिगत एवं प्रवासन संबंधी कारक

सामाजिक-सांस्कृतिक कारक भी बाल श्रम को प्रभावित करते हैं। अनुसंधान दर्शाता है कि निम्न-जाति (अनुसूचित जाति/जनजाति) एवं अल्पसंख्यक समुदायों के बच्चे श्रम-बाजार में अधिक भागीदारी करते हैं। प्रवासन एक अन्य महत्वपूर्ण कारक है — कुमार, सिंह एवं राव (2021) ने पाया कि कोविड-19 लॉकडाउन के दौरान प्रवासी एवं अनौपचारिक अर्थव्यवस्था के 4 करोड़ से अधिक बच्चों की विद्यालयी शिक्षा बाधित हुई, जिससे अनेक बच्चे पुनः श्रम की ओर लौट गए। वेबिंक, स्मिट्स एवं डी जोंग (2015) ने अफ्रीका एवं एशिया के तुलनात्मक अध्ययन में दर्शाया कि बच्चे का निवास-क्षेत्र एवं पारिवारिक संदर्भ उसकी श्रम-संलग्नता के सार्थक संकेतक हैं। गाल्दो, दामेर्त एवं अबेबॉ (2021) ने कृषि-बाल श्रम में लैंगिक पूर्वाग्रह को रेखांकित किया।

2.4 बाल श्रम के प्रभाव एवं शोध-अंतराल

बाल श्रम के प्रभावों संबंधी अध्ययन दर्शाते हैं कि श्रमरत बच्चे शिक्षा से वंचित रहते हैं, लंबे कार्य-घंटों एवं असुरक्षित दशाओं के कारण उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है, तथा वे शोषण के शिकार होते हैं। साहू एवं प्रधान (2020) के संबलपुर अध्ययन में पाया गया कि दो-तिहाई बाल श्रमिक प्रतिदिन 10 घंटे से अधिक कार्य करते थे एवं उनकी दैनिक आय 150 रुपये से भी कम थी। किम एवं ओल्सन (2023) ने समय-उपयोग के परिप्रेक्ष्य से लंबे कार्य-घंटों के बाल-विकास पर प्रभावों को रेखांकित किया, जबकि श्रीवास्तव (2019) ने भारत में कार्यरत बच्चों, बाल श्रम एवं आधुनिक दासता का समग्र अवलोकन प्रदान किया। राव एवं बुर्ला (2024) ने गरीबी, अभिभावकीय निरक्षरता एवं अस्थिर रोजगार को बाल श्रम के बने रहने के महत्वपूर्ण कारकों के रूप में पुष्ट किया। तथापि, असंगठित क्षेत्र के संदर्भ में निर्धारकों एवं प्रभावों दोनों का एकीकृत, प्राथमिक-आँकड़ा आधारित विश्लेषण अपेक्षाकृत कम है; प्रस्तुत अध्ययन इसी शोध-अंतराल को संबोधित करता है।

3. शोध प्रविधि

3.1 शोध अभिकल्प एवं अध्ययन क्षेत्र

प्रस्तुत अध्ययन एक वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध-अभिकल्प (descriptive-cum-analytical design) पर आधारित अनुप्रस्थ-काट (cross-sectional) सर्वेक्षण है। अध्ययन असंगठित क्षेत्र में कार्यरत बाल श्रमिकों के ग्रामीण एवं शहरी दोनों परिवेशों को सम्मिलित करता है, जिससे कृषि, घरेलू कार्य, ढाबा/होटल, ईंट-भट्ठा/निर्माण, लघु विनिर्माण एवं कूड़ा बीनने जैसे विविध क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

हो सके। अनुप्रस्थ-काट अभिकल्प इसलिए उपयुक्त माना गया क्योंकि यह एक निश्चित समय-बिंदु पर बाल श्रमिकों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि एवं श्रम-दशाओं का समग्र चित्र प्रस्तुत करता है।

3.2 प्रतिदर्श एवं प्रतिचयन

अध्ययन हेतु कुल 200 बाल श्रमिकों (5–14 वर्ष आयु-वर्ग) का प्रतिदर्श चुना गया। चूँकि बाल श्रमिकों की कोई पूर्ण प्रतिचयन-रूपरेखा (sampling frame) उपलब्ध नहीं होती, इसलिए उद्देश्यपूर्ण (purposive) एवं हिमपात (snowball) प्रतिचयन तकनीक का प्रयोग किया गया, जो 'छिपी हुई' अथवा कठिनाई से पहुँच योग्य जनसंख्या के अध्ययन हेतु उपयुक्त मानी जाती है। आँकड़ा-संकलन में स्वयं बाल श्रमिक तथा, जहाँ आवश्यक हुआ, उनके अभिभावकों से जानकारी ली गई। नैतिक दृष्टिकोण से बच्चों एवं अभिभावकों की सूचित सहमति प्राप्त की गई, गोपनीयता बनाए रखी गई तथा यह सुनिश्चित किया गया कि साक्षात्कार से बच्चों को कोई असुविधा न हो।

3.3 आँकड़ा संकलन एवं उपकरण

प्राथमिक आँकड़े एक पूर्व-परीक्षित (pre-tested), संरचित प्रश्नावली एवं साक्षात्कार-अनुसूची के माध्यम से एकत्र किए गए, जिसमें जनसांख्यिकीय विवरण (आयु, लिंग, निवास-क्षेत्र, सामाजिक वर्ग), पारिवारिक आय, अभिभावकीय शिक्षा, प्रवासन-स्थिति, कार्य-क्षेत्र, दैनिक कार्य-घंटे, विद्यालयी स्थिति एवं स्वास्थ्य-समस्याओं संबंधी प्रश्न सम्मिलित थे। प्रश्नावली की विश्वसनीयता एक लघु पूर्व-परीक्षण (pilot test) द्वारा जाँची गई। द्वितीयक आँकड़े जनगणना, आई.एल.ओ.-यूनिसेफ प्रतिवेदनों एवं शोध-पत्रिकाओं से लिए गए।

3.4 चर एवं सांख्यिकीय विश्लेषण

अध्ययन में स्वतंत्र चर (independent variables) के रूप में पारिवारिक आय, अभिभावकीय शिक्षा, प्रवासन-स्थिति एवं बच्चे की आयु को लिया गया, जबकि आश्रित चर (dependent variables) के रूप में दैनिक कार्य-घंटे, विद्यालयी स्थिति एवं स्वास्थ्य-समस्याओं को लिया गया। एकत्रित आँकड़ों का विश्लेषण SPSS सॉफ़्टवेयर में किया गया। प्रयुक्त सांख्यिकीय तकनीकों में सम्मिलित थीं — वर्णनात्मक सांख्यिकी (आवृत्ति, प्रतिशत, माध्य, मानक विचलन), संबंध-परीक्षण हेतु ची-वर्ग परीक्षण, चरों के पारस्परिक संबंध हेतु पियर्सन सहसंबंध गुणांक, तथा कार्य-घंटों के निर्धारकों की सापेक्ष शक्ति ज्ञात करने हेतु बहु-रैखिक प्रतिगमन (multiple linear regression) विश्लेषण। सार्थकता का स्तर 0.05 निर्धारित किया गया। अध्ययन की प्रमुख शून्य परिकल्पनाएँ इस प्रकार रहीं: पारिवारिक आय, अभिभावकीय शिक्षा एवं प्रवासन का बच्चे की विद्यालयी स्थिति से कोई सार्थक संबंध नहीं है, तथा इन कारकों का बच्चों के दैनिक कार्य-घंटों पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं है।

नोट: इस अध्ययन में प्रस्तुत आँकड़े एवं सांख्यिकीय परिणाम पद्धति को प्रदर्शित करने हेतु उदाहरणात्मक (illustrative) हैं; सबमिशन से पूर्व इन्हें वास्तविक क्षेत्र-सर्वेक्षण आँकड़ों से प्रतिस्थापित किया जाना चाहिए।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

4. परिणाम एवं विवेचना

4.1 प्रतिदर्श की जनसांख्यिकीय एवं सामाजिक-आर्थिक रूपरेखा

तालिका 1 प्रतिदर्श की जनसांख्यिकीय एवं सामाजिक-आर्थिक विशेषताओं को प्रस्तुत करती है। प्रतिदर्श में 64.5% बालक एवं 35.5% बालिकाएँ थीं; बच्चों की औसत आयु 11.80 वर्ष (मानक विचलन = 1.81) रही। बालकों की अधिक भागीदारी इस ओर संकेत करती है कि बालिकाओं का श्रम प्रायः घरेलू एवं अदृश्य कार्यों में होता है, जो आँकड़ों में पूर्णतः दर्ज नहीं हो पाता। 61% बच्चे ग्रामीण क्षेत्र से थे। सामाजिक संरचना की दृष्टि से अनुसूचित जाति (33.5%), अन्य पिछड़ा वर्ग (36.5%) एवं अनुसूचित जनजाति (17.5%) का प्रतिनिधित्व अधिक रहा, जो वंचित समुदायों की उच्च भेद्यता की पुष्टि करता है। उल्लेखनीय है कि 40.5% परिवारों की मासिक आय 5,000 रुपये से कम थी तथा 49.5% बच्चों के अभिभावक निरक्षर थे, जो गरीबी एवं अशिक्षा के गहन अंतर्संबंध को दर्शाता है। लगभग आधे (47%) बच्चे प्रवासी परिवारों से थे, जो असंगठित क्षेत्र में बाल श्रम एवं प्रवासन के घनिष्ठ संबंध को रेखांकित करता है।

तालिका 1: प्रतिदर्श की जनसांख्यिकीय एवं सामाजिक-आर्थिक रूपरेखा (N = 200)

चर (Variable)	श्रेणी (Category)	आवृत्ति (f)	प्रतिशत (%)
लिंग	बालक	129	64.5
	बालिका	71	35.5
निवास क्षेत्र	ग्रामीण	122	61.0
	शहरी	78	39.0
सामाजिक वर्ग	अनुसूचित जाति (SC)	67	33.5
	अनुसूचित जनजाति (ST)	35	17.5
	अन्य पिछड़ा वर्ग (OBC)	73	36.5
	सामान्य	25	12.5
मासिक पारिवारिक आय (₹)	5,000 से कम	81	40.5
	5,000–10,000	71	35.5
	10,000–15,000	35	17.5
	15,000 से अधिक	13	6.5
अभिभावकीय शिक्षा	निरक्षर	99	49.5
	प्राथमिक	49	24.5
	माध्यमिक	39	19.5
	माध्यमिक से ऊपर	13	6.5
प्रवासन स्थिति	प्रवासी	94	47.0
	गैर-प्रवासी	106	53.0

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

स्रोत: क्षेत्र सर्वेक्षण (उदाहरणात्मक आँकड़े)।

4.2 कार्य-क्षेत्र एवं श्रम-दशाओं का वितरण

तालिका 2 बच्चों के कार्य-क्षेत्र एवं प्रमुख श्रम-दशाओं को दर्शाती है। सर्वाधिक बच्चे कृषि (29.5%) में संलग्न पाए गए, जो इस वैश्विक निष्कर्ष से मेल खाता है कि कृषि बाल श्रम का सबसे बड़ा नियोक्ता है। कृषि के पश्चात ढाबा/होटल (18.5%), ईंट-भट्ठा/निर्माण (15.0%) एवं घरेलू कार्य (14.0%) का स्थान रहा। बच्चों के दैनिक कार्य-घंटे औसतन 7.92 घंटे (मानक विचलन = 1.35) रहे, जो न्यूनतम 4 से अधिकतम 12 घंटे तक विस्तृत थे। यह दीर्घ कार्य-अवधि बच्चों के विश्राम, खेल एवं अध्ययन के समय को गंभीर रूप से प्रभावित करती है तथा उनके समग्र विकास में बाधक है। विद्यालयी स्थिति के संदर्भ में, 73.5% बच्चे या तो कभी विद्यालय नहीं गए अथवा विद्यालय छोड़ चुके थे, जो बाल श्रम के शिक्षा पर पड़ने वाले प्रत्यक्ष प्रभाव की गंभीरता को रेखांकित करता है। आधे बच्चों (50%) ने किसी न किसी प्रकार की स्वास्थ्य-समस्या की सूचना दी, जो असुरक्षित श्रम-दशाओं का परिणाम है।

तालिका 2: कार्य-क्षेत्र एवं श्रम-दशाओं का वितरण (N = 200)

कार्य-क्षेत्र / दशा	श्रेणी	आवृत्ति (f)	प्रतिशत (%)
कार्य-क्षेत्र	कृषि	59	29.5
	ढाबा/होटल	37	18.5
	ईंट-भट्ठा/निर्माण	30	15.0
	घरेलू कार्य	28	14.0
	लघु विनिर्माण	24	12.0
	कूड़ा बीनना/अन्य	22	11.0
विद्यालयी स्थिति	कभी नहीं गए/छोड़ चुके	147	73.5
	उपस्थित/अनियमित	53	26.5
स्वास्थ्य समस्या	हाँ	100	50.0
	नहीं	100	50.0

स्रोत: क्षेत्र सर्वेक्षण (उदाहरणात्मक आँकड़े)। दैनिक कार्य-घंटे: माध्य = 7.92, मानक विचलन = 1.35।

4.3 निर्धारकों एवं प्रभावों का ची-वर्ग विश्लेषण

परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु निर्धारकों एवं बच्चों की विद्यालयी/स्वास्थ्य स्थिति के बीच ची-वर्ग परीक्षण किया गया, जिसके परिणाम तालिका 3 में प्रस्तुत हैं। परिणामों से स्पष्ट होता है कि अभिभावकीय शिक्षा का बच्चे की विद्यालयी स्थिति से अत्यधिक सार्थक संबंध है ($\chi^2 = 46.10$, $df = 3$, $p < 0.001$), अर्थात् जिन बच्चों के अभिभावक शिक्षित थे, उनके विद्यालय जाने की संभावना अधिक थी। इसी प्रकार पारिवारिक आय ($\chi^2 = 16.01$, $p < 0.01$) एवं प्रवासन ($\chi^2 = 5.66$, $p < 0.05$) का भी विद्यालयी स्थिति से सार्थक संबंध पाया गया, जो दर्शाता है कि निर्धन एवं प्रवासी परिवारों के बच्चे विद्यालय से अधिक

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

वंचित रहते हैं। निम्न आय का स्वास्थ्य-समस्याओं से प्रबल संबंध रहा ($\chi^2 = 35.74$, $p < 0.001$), जो गरीबी एवं बाल-स्वास्थ्य के बीच सीधे संबंध को रेखांकित करता है। इन परिणामों के आधार पर संबंधित शून्य परिकल्पनाएँ अस्वीकृत की जाती हैं। उल्लेखनीय है कि सामाजिक वर्ग एवं विद्यालयी स्थिति के बीच संबंध सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं पाया गया ($\chi^2 = 3.45$, $p > 0.05$), जो दर्शाता है कि इस प्रतिदर्श में आय एवं शिक्षा, जाति की तुलना में अधिक प्रबल निर्धारक हैं।

तालिका 3: निर्धारकों एवं प्रभावों के बीच ची-वर्ग परीक्षण के परिणाम

स्वतंत्र चर	आश्रित चर	df	χ^2 मान	p मान
अभिभावकीय शिक्षा	विद्यालयी स्थिति	3	46.10	0.000***
पारिवारिक आय	विद्यालयी स्थिति	3	16.01	0.001**
प्रवासन स्थिति	विद्यालयी स्थिति	1	5.66	0.017*
पारिवारिक आय	स्वास्थ्य समस्या	3	35.74	0.000***
सामाजिक वर्ग	विद्यालयी स्थिति	3	3.45	0.328 (NS)

*** $p < 0.001$, ** $p < 0.01$, * $p < 0.05$,

4.4 कार्य-घंटों के निर्धारकों का प्रतिगमन विश्लेषण

बच्चों के दैनिक कार्य-घंटों (आश्रित चर) पर पारिवारिक आय, अभिभावकीय शिक्षा, प्रवासन एवं आयु (स्वतंत्र चर) का बहु-रैखिक प्रतिगमन विश्लेषण किया गया, जिसके परिणाम तालिका 4 में प्रस्तुत हैं। प्रतिगमन प्रतिरूप समग्र रूप से सार्थक रहा ($F = 31.99$, $p < 0.001$) तथा इसने कार्य-घंटों में लगभग 39.6% भिन्नता की व्याख्या की ($R^2 = 0.396$, समायोजित $R^2 = 0.384$)। परिणामों से ज्ञात हुआ कि पारिवारिक आय का कार्य-घंटों पर ऋणात्मक एवं सार्थक प्रभाव है ($B = -0.757$, $p < 0.001$) — अर्थात् आय जितनी कम, कार्य-घंटे उतने अधिक। प्रवासन का धनात्मक एवं सार्थक प्रभाव रहा ($B = 0.977$, $p < 0.001$), जो दर्शाता है कि प्रवासी परिवारों के बच्चे अधिक घंटे कार्य करते हैं — यह निष्कर्ष ईंट-भट्ठों एवं निर्माण-स्थलों पर प्रवासी बच्चों की दीर्घ श्रम-अवधि संबंधी पूर्व-अध्ययनों के अनुरूप है। अभिभावकीय शिक्षा का भी ऋणात्मक एवं सार्थक प्रभाव पाया गया ($B = -0.228$, $p < 0.01$), जबकि आयु का प्रभाव सांख्यिकीय रूप से सार्थक नहीं रहा ($p > 0.05$)। इन परिणामों के आधार पर संबंधित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। स्पष्टतः, गरीबी एवं प्रवासन बाल श्रम की तीव्रता के सर्वाधिक प्रबल निर्धारक हैं।

तालिका 4: कार्य-घंटों पर बहु-रैखिक प्रतिगमन के परिणाम (आश्रित चर = दैनिक कार्य-घंटे)

स्वतंत्र चर	B (गुणांक)	मानक त्रुटि	t मान	p मान
स्थिरांक (Constant)	8.587	0.532	16.15	0.000***
पारिवारिक आय	−0.757	0.082	−9.19	0.000***
अभिभावकीय शिक्षा	−0.228	0.079	−2.91	0.004**
आयु	0.061	0.041	1.48	0.140 (NS)

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

प्रवासन (प्रवासी = 1)	0.977	0.151	6.47	0.000***

R^2 = 0.396, समायोजित R^2 = 0.384, F = 31.99, p < 0.001। *** p < 0.001, ** p < 0.01

4.5 विवेचना

उपर्युक्त परिणाम विद्यमान साहित्य से व्यापक रूप से मेल खाते हैं तथा कई महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं। प्रथमतः, गरीबी का बाल श्रम की तीव्रता पर सर्वाधिक प्रबल प्रभाव इस सुस्थापित निष्कर्ष की पुष्टि करता है कि गरीबी बाल श्रम का मूल कारण है। निर्धन परिवारों के लिए बच्चों का श्रम जीवन-निर्वाह की तात्कालिक आवश्यकता बन जाता है, जिससे उनकी शिक्षा एवं भविष्य गौण हो जाते हैं। द्वितीयतः, अभिभावकीय शिक्षा का सुरक्षात्मक प्रभाव शिक्षा एवं बाल श्रम के बीच ऋणात्मक संबंध संबंधी पूर्व-अध्ययनों के अनुरूप है — शिक्षित अभिभावक शिक्षा के महत्व को अधिक समझते हैं और बच्चों को विद्यालय भेजने की अधिक संभावना रखते हैं।

तृतीयतः, प्रवासन का सार्थक धनात्मक प्रभाव इस अवलोकन को बल देता है कि प्रवासी परिवारों के बच्चे, विशेषकर ईंट-भट्ठों एवं निर्माण-स्थलों पर, अधिक एवं दीर्घ श्रम के प्रति संवेदनशील होते हैं; प्रवास के दौरान विद्यालयी निरंतरता का टूटना इन बच्चों को श्रम की ओर धकेलता है। चतुर्थतः, 73.5% बच्चों का विद्यालय से बाहर होना तथा निम्न आय का स्वास्थ्य-समस्याओं से प्रबल संबंध यह स्पष्ट करते हैं कि बाल श्रम बच्चों के शिक्षा एवं स्वास्थ्य — दोनों आयामों — पर गंभीर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। शिक्षा से वंचित रहकर ये बच्चे कौशल अर्जित नहीं कर पाते और वयस्क होने पर भी अकुशल, अल्प-वेतन श्रम तक सीमित रह जाते हैं, जिससे गरीबी का अंतर-पीढ़ीगत दुष्चक्र निरंतर बना रहता है। समग्रतः, विश्लेषण यह स्थापित करता है कि बाल श्रम के निर्धारक एवं प्रभाव परस्पर गुँथे हुए हैं और इन्हें एक साथ संबोधित करना आवश्यक है।

5. निष्कर्ष एवं सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन ने असंगठित क्षेत्र में बाल श्रम के निर्धारकों एवं प्रभावों का 200 बाल श्रमिकों के प्रतिदर्श पर आधारित अनुभवजन्य विश्लेषण प्रस्तुत किया। निष्कर्षतः, पारिवारिक गरीबी, अभिभावकीय शिक्षा का निम्न स्तर एवं प्रवासन बाल श्रम के सर्वाधिक प्रबल निर्धारक सिद्ध हुए, जबकि बाल श्रम का बच्चों की शिक्षा एवं स्वास्थ्य पर स्पष्ट प्रतिकूल प्रभाव पाया गया। ची-वर्ग एवं प्रतिगमन — दोनों विश्लेषणों ने इन संबंधों की सांख्यिकीय सार्थकता की पुष्टि की। अध्ययन यह रेखांकित करता है कि बाल श्रम एक पृथक समस्या नहीं, बल्कि गरीबी, शिक्षा एवं सामाजिक असमानता से जुड़ा एक व्यापक विकासात्मक प्रश्न है। इन निष्कर्षों के आधार पर निम्नलिखित नीतिगत सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं:

- निर्धन परिवारों के लिए प्रत्यक्ष आय-सहायता, रोजगार-गारंटी एवं सामाजिक सुरक्षा का विस्तार किया जाए, ताकि बच्चों को श्रम की ओर धकेलने वाली आर्थिक विवशता कम हो।
- अभिभावकीय एवं बाल-शिक्षा को सुदृढ़ करते हुए गुणवत्तापूर्ण, नि:शुल्क एवं सुलभ शिक्षा सुनिश्चित की जाए; विद्यालय-त्यागी बच्चों के लिए सेतु-पाठ्यक्रम (bridge courses) संचालित किए जाएँ।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

- प्रवासी परिवारों के बच्चों के लिए कार्य-स्थल पर मोबाइल विद्यालय, क्रेच एवं लक्षित संरक्षण-तंत्र विकसित किए जाएँ, ताकि प्रवास के दौरान शिक्षा की निरंतरता बनी रहे।
- असंगठित क्षेत्र में श्रम-निरीक्षण एवं डिजिटल निगरानी को सुदृढ़ किया जाए, बाल श्रम की रिपोर्टिंग हेतु हेल्पलाइन एवं समुदाय-आधारित निगरानी तंत्र को प्रोत्साहित किया जाए।
- बाल श्रम से मुक्त कराए गए बच्चों के प्रभावी पुनर्वास हेतु शिक्षा, स्वास्थ्य एवं परिवार को आर्थिक सहयोग सुनिश्चित किया जाए, ताकि वे पुनः श्रम की ओर न लौटें।

अध्ययन की सीमाएँ भी उल्लेखनीय हैं: यह एक अनुप्रस्थ-काट अध्ययन है जो गैर-प्रायिकता (non-probability) प्रतिचयन पर आधारित है, अतः निष्कर्षों के सामान्यीकरण में सतर्कता आवश्यक है। साथ ही, स्व-कथित (self-reported) सूचना में स्मृति एवं सामाजिक-वांछनीयता संबंधी पूर्वाग्रह की संभावना रहती है। भविष्य के शोध के लिए बड़े, प्रायिकता-आधारित एवं अनुदैर्ध्य (longitudinal) अध्ययन, तथा असंगठित क्षेत्र में बाल श्रम के मापन हेतु विशेष आवधिक सर्वेक्षण इस क्षेत्र की समझ को और गहन बना सकते हैं। समग्रतः, बाल श्रम का स्थायी उन्मूलन गरीबी, शिक्षा एवं सामाजिक सुरक्षा को एक साथ संबोधित करने वाले समन्वित, बहु-हितधारक प्रयासों से ही संभव है। एक स्वस्थ, शिक्षित एवं सुरक्षित बचपन ही एक समृद्ध एवं न्यायसंगत राष्ट्र की वास्तविक नींव है।

संदर्भ सूची

1. अहमद, टी., सिन्हा, ए. एवं शास्त्री, आर. के. (2016). भारत में बाल श्रम के विविध निर्धारक एवं बाल श्रमिकों में कौशल विकास की आवश्यकता। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी एंड सोशल पॉलिसी, 36(9/10), 638–650.
2. बासु, के. एवं ज़ानात्तोस, ज़ेड. (2015). वैश्विक बाल श्रम समस्या: हम क्या जानते हैं और क्या कर सकते हैं? द वर्ल्ड बैंक इकनॉमिक रिव्यू, 17(2), 147–173.
3. दास, एस. (2022). भारत में बाल श्रम के निर्धारक: आवधिक श्रमबल सर्वेक्षण पर आधारित क्षेत्रीय विश्लेषण। चिल्ड्रन एंड यूथ सर्विसेज़ रिव्यू, 138, 106500.
4. धनराज, एस. एवं महांबरे, वी. (2019). पारिवारिक संरचना, शिक्षा एवं भारत में बाल श्रम। जर्नल ऑफ फैमिली एंड इकनॉमिक इश्यूज़, 40(3), 446–460.
5. दिमरी, ए. एवं मणियार, वी. (2022). भारत में बाल श्रम के निर्धारक। इकनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली, 57(42), 45–53.
6. गाल्दो, जे. सी., दामेर्त, ए. एवं अबेबॉ, डी. (2021). कृषि-बाल श्रम में लैंगिक पूर्वाग्रह: सर्वेक्षण-अभिकल्प प्रयोगों से साक्ष्य। द वर्ल्ड बैंक इकनॉमिक रिव्यू, 35(4), 872–891.
7. अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन एवं यूनिसेफ. (2021). बाल श्रम: वैश्विक अनुमान 2020, प्रवृत्तियाँ एवं आगे का मार्ग। आई.एल.ओ. एवं यूनिसेफ.
8. खानम, आर. एवं रहमान, एम. एम. (2016). बाल श्रम, शिक्षा एवं स्वास्थ्य: साहित्य की समीक्षा। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल इकनॉमिक्स, 43(11), 1085–1100.

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

9. किम, जे. एवं ओल्सन, डब्ल्यू. (2023). समय-उपयोग के परिप्रेक्ष्य से भारत में बाल श्रम के हानिकारक रूप। डेवलपमेंट इन प्रैक्टिस, 33(2), 190–204.
10. किम, जे., ओल्सन, डब्ल्यू. एवं अरुण, एस. (2020). भारत में बाल श्रम का बायेसियन अनुमान। चाइल्ड इंडिकेटर्स रिसर्च, 13(4), 1975–2001.
11. कुमार, ए., सिंह, पी. एवं राव, एम. (2021). भारत में प्रवासी बच्चों एवं बाल श्रम पर कोविड-19 लॉकडाउन का प्रभाव। जर्नल ऑफ पब्लिक अफेयर्स, 21(4), e2614.
12. मिश्रा, एच. के. (2021). विकासशील देशों के वंचित परिवारों में बाल श्रम की विविधता एवं इसके कारण: ओडिशा, भारत से साक्ष्य। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एडवांस्ड रिसर्च, 9(3), 451–460.
13. पाल, एस. एवं महतो, एस. (2022). बाल श्रम का सामाजिक-जनसांख्यिकीय एवं आर्थिक चरित्र-चित्रण: एक अनुभवजन्य अन्वेषण। इंडियन जर्नल ऑफ ज्योग्राफी एंड एनवायरनमेंट, 18, 55–68.
14. पॉल, बी. (2019). भारत में बाल श्रम के निर्धारक: एक जिला-स्तरीय विश्लेषण। इंडियन जर्नल ऑफ ह्यूमन डेवलपमेंट, 13(2), 220–235.
15. राव, एन. एवं बुर्ला, एस. (2024). भारत में बाल श्रम का बने रहना: गरीबी, अभिभावकीय निरक्षरता एवं अस्थिर रोजगार की भूमिका। चिल्ड्रन एंड यूथ सर्विसेज़ रिव्यू, 156, 107–120.
16. साहू, बी. एवं प्रधान, आर. (2020). संबलपुर जिला, ओडिशा में बाल श्रम के निर्धारकों का अनुभवजन्य अध्ययन। इंडियन जर्नल ऑफ पब्लिक हेल्थ रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 11(6), 512–518.
17. सिंह, एस. एवं मोदी, एस. (2023). भारत में बाल श्रम एवं कानूनों का एक आलोचनात्मक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ अर्ली चाइल्डहुड स्पेशल एजुकेशन, 15(2), 1–10.
18. श्रीवास्तव, आर. एन. (2019). भारत में कार्यरत बच्चे, बाल श्रम एवं आधुनिक दासता: एक अवलोकन। इंडियन पीडियाट्रिक्स, 56(8), 633–638.
19. वेबिंक, ई., स्मिट्स, जे. एवं डी जोंग, ई. (2015). अफ्रीका एवं एशिया में बाल श्रम: परिवार एवं संदर्भगत निर्धारक। द यूरोपियन जर्नल ऑफ डेवलपमेंट रिसर्च, 27(4), 567–584.
20. विश्व बैंक. (2018). विकासशील देशों में बाल श्रम एवं शिक्षा: साक्ष्यों की समीक्षा। विश्व बैंक नीति शोध कार्य-पत्र सं. 8470.